B.A. Part One
Paper 1st

ECONOMICS

आगत निर्गत विश्लेषण
input-output analysis:

आगत निर्गत आयोजन की एक नई तकनीक है जिसका अविष्कार प्रो० वैसिली डब्ल्यू लियोन्तिफ ने 1951 में किया अर्थव्यवस्था की परस्पर निर्भरताओं तथा जटिलताओं को समझने के लिए अन्तः उद्योग (inter industry) के संबंधों का विश्लेषण करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। इस विश्लेषण से, इस प्रकार पूर्ति और माँग में संतुलन बनाए रखने की स्थितियों को समझा जा सकता है। यह तकनीक अर्थव्यवस्था के सामान्य संतुलन की व्याख्या करती है। इसे उद्योग विश्लेषण कहने में भी कोई आश्चर्य नहीं होगी।

प्रो० जे० आर० हिक्स के अनुसार आगत वह वस्तु है "जिसे उद्यम के लिए खरीदा जाता है" और निर्गत वह है "जिसे उद्यम बेचता है" एक आगत प्राप्त होती है जबकि निर्गत खरीदा जाता है या उत्पादन किया जाता है। आगत फर्म के खर्च को प्रकट करती है जबकि निर्गत उसकी आमदनी को।

आगत निर्गत विश्लेषण यह बतलाता है कि समस्त आर्थिक व्यवस्था में औद्योगिक अन्तः संबंध और अन्तः निर्भरताएं होती है। एक उद्योग की आगत दूसरे उद्योग की निर्गत होती है और विलोमतः भी। जिससे अन्त में उनके आपसी संबंधों के कारण समस्त अर्थव्यवस्था में पूर्ति और माँग का संतुलन होता है। इस्पात उद्योग के लिए कोयला आगत है और कोयला उद्योग के लिए इस्पात आगत है। वैसे ये अपने अपने उद्योगों के निर्गत हैं। भिन्न भिन्न उद्योगों के बीच "भँवर और प्रतिधाराओं" में वस्तुओं की प्रवाह होती है।

सारांश यह है कि आगत निर्गत विश्लेषण का अर्थ संतुलन की स्थिति में, समस्त अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन का मुद्रा मूल्य अन्तः उद्योग आगतों के मुद्रा मूल्य की राशि तथा अन्तः उद्योग निर्गतों के मुद्रा मूल्यों की राशि के जोड़ बराबर होना जरूरी है।

विशेषताएँ :-

आगत निर्गत विश्लेषण सामान्य संतुलन का उत्कृष्टतम रूप है। कुल मिलाकर इसके तीन प्रमुख तत्व हैं, प्रथम आगत निर्गत विश्लेषण पूरी अर्थव्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित करता है जो संतुलन में हो। आंशिक संतुलन विश्लेषण पर यह लागू नहीं होता। दूसरे, यह माँग विश्लेषण से कोई वास्ता नहीं रखता। तिसरा यह अनुभाविक अन्वेषण पर आधारित है।

P.T.O.

Scanned by CamScanner

इसी प्रकार दूसरा स्तंभ औद्योगिक क्षेत्र के आगत खर्च की व्याख्या करता है अर्थात (150+250+100 = 500) इस प्रकार "एक स्तंभ अनुरूप उद्योग के उत्पादन फलन पर एक बिन्दु देता है" अन्तिम माँग स्तंभ यह प्रकट करता है कि उपभोग और सरकारी खर्च के लिए क्या मिल सकता है। इस स्तंभ के अनुरूप तीसरी पंक्ति को शून्य दिखाया गया है। इसका मतलब है कि श्रम का सीधा उपभोग नहीं होता। ध्यान देने योग्य है कि मूल्य वृद्धि तथा अन्तिम माँग के कुल जोड़ एक दूसरे के बराबर होते हैं।